# श्री सद्गुरु महिमा

परम पवित्र स्थान है सिद्धदाता का धाम।
सारे तीरथ कर लिये लेकर गुरु का नाम।।

गुरु चरणन की धूल भी मिले अगर नादान।
दौड़ के सर पे धार ले या को नहीं बखान।।

ब्रह्म अस्त्र की काट है गुरु किरपा बेकाट।
गुरु किरपा जा पर भई वा की बन गई बात।।

अब आगे ना व्यर्थ हो साँसों का व्योपार।
सिमर नाम गुरु देव का जो जग के आधार।।

गुरु बचावनहार हैं गुरु ही बख्शनहार।
जा के सिर पर हाथ है वा को बेड़ा पार।।

जहाँ समर्पण भाव है वहाँ गुरु आशीष।
बगिया सेवा धर्म की प्रेमासुँन से सींच।।

ॐ श्री सद्गुरु देवाय नमः।

# श्री सद्गुरु कवच

दोहा

दया करी गुरुदेव ने दिल से किया जो याद।
रक्षा करने आ गये दास की दीनानाथ।।

जिनके चरण महासुखदाई। नाम लेते बन जाता कारज।
जिनकी शरण महा फलदाई।। नाम सदा देता है। धीरज।।
जिनका सिमरण सुख का धाम। मानवता का पाठ पढ़ाते।
ऐसे सद्गुरु को परणाम।। सद्मारग पर सदा चलाते।।

जिनकी महिमा कही न जाय। ज़िसने अपना मान लिया है।
जो दीनन के सदा सहाय।। उसने तुमको जान लिया है।।
जिनके दरशन का परताप। जितना जाना उतना काफी।
हर ले सब दुःख और संताप।। भूल-चूक पर देना माफ़ी।।

जिनकी नज़र में जो भी आया। भक्तन का तुम मान बढ़ाते।
उसने अपना दोष कटाया।। रोते आते हँसते जाते।।
जिनको कहते औघड़ दानी। जिनकी संगत में सब धाम ।
उनकी ये दुनिया दीवानी।। ऐसे दाता को परणाम।।

जिनका ऊँचा है दरबार। उनका होता बेड़ा पार।
जो दासों के हैं आधार।। सिमरन है जिनका आधार।।
रंक जहाँ राजा बन जाते। जिसने नाम की महिमा जानी।
ऐसा वो दरबार लगाते।। उसका नहीं रहा कोई सानी।।

भक्ति में शक्ति है भाई। सब संतों का है फरमान।
बार-बार ये बात बताई।। नाम के पीछे हैं भगवान।।
खेल नाम का ही सारा है। गुरु नाम है कवच हमारा।
सद्गुरु नाम तेरा प्यारा है।। क्या कर लेगा ये संसार।।

मात पिता और तुम्हीं पालक। नाम ही रक्षा कवच कहाए।
हम सब तेरे दास व बालक।। नाम ही बिगड़े काम बनाए।।
तुम्हीं मित्र और तुम्ही सखा हो। सद्गुरु कवच जो पढ़े पढ़ाए।
हम दासन पर सदा दया हो।। वा पे विपत्त कभी न आए।।

दोहा

जय गुरुदेव का जाप ही सब मंत्रों का मूल।
'पारस' सतगुरु सदा रहें दासों पर अनुकूल।।

ॐ श्री सद्गुरु देवाय नमः।

# श्री सद्गुरु चालीसा

दोहा
निष्कंटक हो मारग स्वामी, चोला हो निर्दोष।
सद्गुरु तुम्हरी शरण में, सदा रहे संतोष।।

## चौपाई

जय जय जय गुरुदेव गुसाँई।
कृपा करो दासन पर साँई।।
तुम्हारी महिमा देव भी गावें।
श्री चरणन में शीश झुकावें।।

सद्गुण जागे सब चितमाहीं।
गुरुकृपा बिन संभव नाहीं।।
गुरुसेवा सम भक्ति न कोई।
योग ध्यान आवत ना मोहीं।।

दीनन के तुम दीन दयाला।
कृपा करो मो पर किरपाला।।
करनी से कुछ जोड़ा नाई।
नहीं कहता मैं सुनी सुनाई।।

विधि नियम जप तप नहीं आवे।
दास तुम्हारा दास कहावो।।
हूँ तुम्हारे दासन को दासा।
और नहीं कछु मोरे पासा।।

सद्गुरु तुम हो दया के सागर।
धन्य हुआ मैं दर पे आकर।।
सिद्धन को भी देने वाले।
दाता अपने बड़े निराले।।

नारायण के दरस तुम्हारे।
तुम भक्त न के प्राणन प्यारे।।
तुम्हारी लीला तुम ही जानो।
दासन को प्रभु अपना मानो।।

वेद शास्त्र की शोभा तुमसे।
ब्रह्म वाक्य निकले हैं मुखसे।।
रूप तुम्हारा ज्योति स्वरूपा
ध्यान तुम्हारा परम अनूपा।।

कृपादृष्टि सद्गुरु कर दीजे।
भवबाधा मोरी हर लीजे।।
भक्ति को तुम याद बताते।
दीनों पर तुम दया दिखाते।।

तीनों काल के तुम हो ज्ञाता।
भाग्यवान ही शरण में आता।।
चमत्कार तुम नित्य दिखाते।
विश्वासी के भाग जगाते।।

तुम्हरो आसन ब्रह्म को आसन।
आगे कहूँ पाय अनुशासन।।
निबलों के संबल हैं दाता।
जनम-जनम का तुमसे नाता।।

परमहंस है परम गति में।
अज्ञानी की यही मति में।।
समरथ तुम्हरी जग जाने है।
जगत्गुरु दुनिया माने है।।

धन-धन सद्गुरु भाग हमारे।
जो पाये हैं चरण तुम्हारे।।
शरणागत के तुम रखवाले।
जो चाहे शरणागति पा ले।।

भूत प्रेत बाधा हर लेते
जहाँ एक दृष्टि कर देते।।
सब दीनन पर दया तुम्हारी।
हे समदर्शी! जगत मुरारी।।

शोभा इस दर की है न्यारी।
न्योछावर मैं बलि बलिहारी।।
श्रद्धा सुमन करे नित अरपन।
पाया है गर मानव जीवन।।

मानव-जीवन कृपा राम की।
महिमा जानो गुरु नाम की।।
भव सागर ये पार कराये।
गुरुकृपा सब काम बनाये।।

अपनी सारी नेक कमाई।
जन जन पे है सदा लुटाई।।
अपना तप प्रताप बाँटते।
विधि का लिखा रोज़ टालते।।

भाग पलट संतान दिलाते।
रूके हुए सब काम बनाते।।
परमसिद्ध जो भी फरमाते।
वो सब अटल सत्य हो जाते।।

जो सद्गुरु की शरण में आया।
जिसने सद्गुरु नाम कमाया।
उस पर कभी कष्ट नहीं आया।
जो माँगा सो उसने पाया।।

सिद्ध करो यह वाणी गुरुवर।
तुम्हारी कृपा रहे जन जन पर।।
दास तुम्हारा सदा कहेगा।
गुरु चालीसा अमर रहेगा।।

जो नित पाठ करेगा भाई।
ता पर कृपा करे गुरु माई।।
जय गुरुदेव जय श्री गुरुदेवा।
पारसनाथ करे नित सेवा।।

ॐ श्री सद्गुरु देवाय नमः।

# आरती
# श्री सद्गुरु महाराज की।

ओम जय श्री गुरुदेवा
स्वामी जय श्री गुरुदेवा।
तुम्हारी शरण में आकर
सदा करूँ सेवा ।।ॐ जय।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव
तुम सद्गुरु मेरे।
तुम्हारी शरण में आकर
भाग जगे मेरे ।।ॐ जय।।

दीन दुखिन के संबल
तुम सबके दाता।
तुम्हरी दया का स्वामी
पार नहीं पाता ।।ॐ जय।।

तुम दासन के ठाकुर
तुम रक्षक दाता।
तुम्हरे रूप अनेकों
कहा नहीं जाता।। ॐ जय।।

तुम्हरा सिमरन करके
शक्ति मिले दाता।
तुम्हरे दरसन कर के
पाप उतर जाता।। ॐ जय।।

तुम नारायण स्वामी
तुम्हीं इष्ट देवा।
तुम्हारी लीला न्यारी
तुम देवन देवा।। ॐ जय।।

सद्गुरुदेव की आरती
जो कोई जन गावे।
कहे दासन को दासा
सुख संपत्ति पावे।। ॐ जय।।